सोहनलाल द्विवेदी

गान्ध्ययन

गांधी जी के व्यक्तित्व, विचार, एवं जीवन पर
लोकप्रिय कविताओं का संकलन

सोहनलाल द्विवेदी

साहित्य भवन (प्रा.) लिमिटेड
इलाहाबाद

संस्करण	प्रथम, १९७०
प्रकाशक	साहित्य भवन (प्रा.) लिमिटेड, इलाहाबाद - ३
मुद्रक	सम्मेलन मुद्रणालय, प्रयाग
मूल्य	सजिल्द : ४.०० अजिल्द : २.००

प्रस्तावना

राष्ट्रकवि सोहनलाल द्विवेदी हमारे जमाने के कवि हैं। वह जमाना आज न रहा लेकिन, उस जमाने की भक्ति लुप्त नहीं हुई। इसलिए, आज भी उनकी कविता पढ़ते वही आनंद मिलता है, जो उस जमाने का था।

मैं तो चाहूँगा, सोहनलाल जी की कविता में से चयन करके एक संग्रह प्रकाशित किया जाये, और आज उसे युवक-युवतियों के हाथ में दिया जाए, जिसके द्वारा उन्हें गान्धी-युग की भावनाओं का परिचय होगा।

—काका कालेलकर

भाव-विभोर करने वाले छन्द

परमपिता परमेश्वर भगवान राम हुए। जन जन में उनका प्रवेश हुआ। वे लाखों करोड़ों के आशा के आधार हैं।

राम का गुण-गान हजारों लाखों ने किया। न जाने कितने कवियों ने श्रद्धांजलि अर्पित की। कुछ ने आराध्य देव मानकर, कुछ ने पुष्पांजलि चढ़ाकर और कुछ ने यश और कीर्ति का गान कर उन्हें माना, इसका सारा श्रेय तुलसीदास को था। उन्होंने इसे तुलसीकृत रामायण में लिखा, जो करोड़ों कण्ठों से उद्‌घोषित होती है और होती रहेगी। क्यों इसलिए कि उन्होंने इसे शुद्ध सरल भाषा में साधारण से साधारण जनों की समझने वाली भाषा में लिखा। उनके दिल को छुआ। शब्दों का आडम्बर नहीं फिर भी अत्यंत भावपूर्ण है, आज भी जन-जन के कण्ठ में विराजमान है।

आज उसी प्रकार इस युग में महात्मा गांधी हुए। वे मिस्टर गांधी हुए, इसके बाद महात्मा गांधी हुए और फिर हो गये सबके बापू। आज उन्हीं राष्ट्रपिता बापू की शताब्दी हम मना रहे हैं। इसलिये इस अवसर पर उनके जीवन, उनके विचार, उनकी भावना का साहित्य और कविता की आज भरमार है। हां, किसी समय इतना साहित्य प्रकाशित नहीं हुआ है जैसा आज हो रहा है। यह शुभ चिह्न है और उसका स्वागत है। किसी न किसी रूप में तो लोग इसे लेंगे ही।

परन्तु कुछ चीज टिक जायगी, रह जायगी, जन-जन तक प्रवेश करेगी। उन कुछ में भी सर्वोपरि हिन्दी कवियों में पंडित सोहनलाल द्विवेदी की रचना को मैं स्थान देता हूं। बचपन से उन्होंने गांधी को देखा, समझा, उस युग में घूमे। सीधी, सच्ची, सही भाषा में सरलता से साधारण जन भी जिसे दुहरा सके, गुनगुना सके, बापू की वाणी को ऐसे छन्दों में बद्ध किया है। छोटा बच्चा भी जिसे पढ़ता है, गुनगुनाता है और फिर गाने लगता है। मजदूर भी जिसे पढ़ता है और उसे ही अपनी बात उसमें दिखाई देती है। किसान भी जब सुनता है और फिर गुनगुनाता है फिर उसे उसमें अपनापन ही दिखाई पड़ने लगता है। ऐसी उनकी रचना सदा की अमर रचना है।

अब तक उन्होंने विविधता से भरे गांधीदर्शन, गांधी-जीवन पर जो लिखा आप उसे पढ़िये उसमें आज भी वही नयापन मालूम होगा।

उन्होंने अब तक जितनी रचनायें की हैं, बहुत हैं; परन्तु इस शताब्दी वर्ष में नयी पीढ़ी को चुने हुए, चुभते हुए, हृदय को उद्वेलित करने वाले, भाव-विभोर करने वाले छंद पढ़ने को मिलें, इस ग्रन्थ में उसी का प्रयास है।

मैं जब पढ़ता हूँ तो भाव-विभोर हो जाता हूँ। पाठक उसी भाव में जायें इसलिये यह संकलन पाठकों के लिए प्रकाशित किया गया है। मुझे विश्वास है कि इस शताब्दी के अवसर पर यह प्रकाशन बड़ा समयानुकूल और अत्यंत उपयोगी होगा।

अक्षय कुमार करण
मंत्री
उ० प्र० गान्धी-शताब्दि समिति

आभार

कुछ दिन पहले आचार्य काका कालेलकर साहेब का एक पत्र मुझे मिला था, जिसमें यह आग्रह किया गया था, कि मेरी गान्धी-विचारधारा की कविताओं का एक ऐसा संग्रह प्रकाशित किया जाये, जिससे गान्धी-युग का दर्शन प्राप्त हो जाए, और वह आज के युवक-युवतियों के हाथों में दिया जाए। उस पत्र के बाद ही मुझे दूसरा पत्र उत्तर प्रदेश गान्धी-जन्म-शताब्दी के मंत्री करण भाई का मिला। उसमें भी यही अनुरोध था कि अपनी कविताओं का एक ऐसा संकलन कर दूं, जिससे गान्धीजी के व्यक्तित्व एवं कृतत्व का स्वरूप नई पीढ़ी के पाठकों को प्राप्त हो सके।

प्रस्तुत काव्य संकलन के पीछे गान्धी-विचारधारा के समर्थ प्रवक्ता एवं प्रसारक इन्हीं प्रमुख व्यक्तियों की प्रेरणायें हैं। वस्तुतः, इस प्रकाशन के प्रस्तुतकर्ता वे ही हैं मैं नहीं। इस सामयिक सत्परामर्श के लिए हृदय से उनके प्रति अनुगृहीत हूँ।

गान्धीजी का सन्देश घर-घर पहुँचाने में गान्ध्ययन कुछ भी सार्थक हो सके तो इस प्रयास को सफल मानूंगा।

२ अक्टूबर १६६६ —सोहनलाल द्विवेदी

बिन्दकी, (उ० प्र०)

अनुक्रम

गान्ध्ययन

[चित्रकार-श्रीकमलाशंकरसिंह]

पूजा-गीत

वंदना के इन स्वरों में एक स्वर मेरा मिला लो।
राग में जब मत्त झूलो
तो कभी माँ को न भूलो,
अर्चना के रत्नकण में एक कण मेरा मिला लो।
जब हृदय का तार बोले,
शृंखला के बंद खोले;
हों जहाँ बलि शीश अगणित, एक शिर मेरा मिला लो।

●

युगावतार गांधी

चल पड़े जिधर दो डग मग में
चल पड़े कोटि पग उसी ओर,
पड़ गई जिधर भी एक दृष्टि
गड़ गये कोटि दृग उसी ओर,

उसके शिर पर निज धरा हाथ
उसके शिर-रक्षक कोटि हाथ,
जिस पर निज मस्तक झुका दिया
झुक गये उसी पर कोटि माथ;

हे कोटि चरण, हे कोटिबाहु!
हे कोटिरूप, हे कोटिनाम!
तुम एकमूर्त्ति, प्रतिमूर्ति कोटि
हे कोटिमूर्ति, तुमको प्रणाम!

युग बढ़ा तुम्हारी हँसी देख
युग हटा तुम्हारी भृकुटि देख,
तुम अचल मेखला वन भू की
खींचते काल पर अमिट रेख;

तुम बोल उठे, युग बोल उठा,
तुम मौन बने, युग मौन बना,
कुछ कर्म तुम्हारे संचित कर
युगकर्म जगा, युगधर्म तना;

युग-परिवर्त्तक, युग-संस्थापक,
युग-संचालक, हे युगाधार!
युग-निर्माता, युग-मूर्त्ति! तुम्हें
युग-युग तक युग का नमस्कार!

तुम युग-युग की रूढ़ियाँ तोड़
रचते रहते नित नई सृष्टि,
उठती नवजीवन की नींवें
ले नवचेतन की दिव्य-दृष्टि;

धर्माडंबर के खँडहर पर
कर पद-प्रहार, कर धराध्वस्त
मानवता का पावन मंदिर
निर्माण कर रहे सृजनव्यस्त!

बढ़ते ही जाते दिग्विजयी!
गढ़ते तुम अपना रामराज,
आत्माहुति के मणिमाणिक से
मढ़ते जननी का स्वर्णताज!
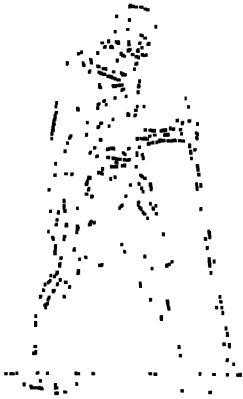
तुम कालचक्र के रक्त सने
दशनों को कर से पकड़ सुदृढ़,
मानव को दानव के मुँह से
ला रहे खींच बाहर बढ़ बढ़;

पिसती कराहती जगती के
प्राणों में भरते अभय दान,
अधमरे देखते हैं तुमको
किसने आकर यह किया त्राण?

दृढ़ चरण, सुदृढ़ करसंपुट से
तुम कालचक्र की चाल रोक,
नित महाकाल की छाती पर
लिखते करुणा के पुण्य श्लोक!

कँपता असत्य, कँपती मिथ्या,
बर्बरता कँपती है थरथर!
कँपते सिंहासन, राजमुकुट
कँपते, खिसके आते भू पर,

हैं अस्त्र-शस्त्र कुंठित लुंठित,
सेनायें करती गृह-प्रयाण!
रणभेरी तेरी बजती है,
उड़ता है तेरा ध्वज निशान!

हे युग-द्रष्टा, हे युग-स्रष्टा,
पढ़ते कैसा यह मोक्ष-मंत्र?
इस राजतंत्र के खँडहर में
उगता अभिनव भारत स्वतंत्र!

वह आया

मन म नूतन वल सँवारता
जीवन के संशय भय हरता,
वंदनीय बापू वह आया
कोटि कोटि चरणों को धरता;

धरणी मग होता है डगमग
जब चलता यह धीर तपस्वी,
गगन मगन होकर गाता है
गाता जो भी राग मनस्वी;

पग पर पग धर-धर चलते हैं
कोटि कोटि योधा सेनानी,
विनत माथ, उन्नत मस्तक ले,
कर निःशस्त्र आत्म-अभिमानी!

युग-युग का घनतम फटता है
नव प्रकाश प्राणों में भरता,
वंदनीय वापू वह आया
कोटि कोटि चरणों को धरता !
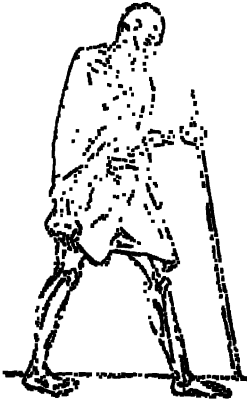
निद्रित भारत, जगा आज है
यह किसका पावन प्रभाव है ?
किसके करुणांचल के नीचे
निर्भयता का बढ़ा भाव है ?

नवचेतन की श्वास ले रहे
हम भी आज जी उठे जग में,
उठा लगाया हृदय-कंठ से
किसने पददलितों को मग में ?

व्यथित राष्ट्र पर आँचल करता
जीवन के नव-रस-कन ढरता,
वंदनीय बापू वह आया
कोटि कोटि चरणों को धरता !

यह किसका उज्ज्वल प्रकाश है
नवजीवन जन जन में छाया,
सत्य जगा, करुणा उठ बैठी
सिमटी मायावी की माया,

'वैभव' से 'विराग' उठ बोला—
'चलो बढ़ो पावन चरणों में,
मानव-जीवन सफल बना लो
चढ़ पूजा के उपकरणों में।'

जननी की कड़ियाँ तड़काता
स्वतंत्रता के नव स्वर भरता,
वंदनीय बापू वह आया
कोटि कोटि चरणों को धरता !

रेखाचित्र

उन्नत ललाट पर चिंता की
कतिपय रेखायें लिए हुए,
विस्तृत भौंहें विशाल नेत्रों में
ममता का मधु पिए हुए,

नासा सुदीर्घ, श्रुतिपुट सुदीर्घ,
सौभाग्य बुद्धि संकेत बने,
नित नमित देखते धरणी को
करुणामय विनय-निकेत बने।

आजानुबाहु फैली दोनों
वक्षस्थल सघन रोम वेष्ठित,
कटि-तट पर खादी की कछनी
अपनी कंगाली की प्रतिनिधि,

शिर पर छोटी सी चोटी के
अनियंत्रित केश छहरते से,
दृढ़ अंग और प्रत्यंग खुले
मलयज के संग लहरते से।

अनमोल सृष्टि की रचना यह
दो अक्षर में हो गई बद्ध,
बापू के लघु संबोधन में
सारा रहस्य युग का निबद्ध!
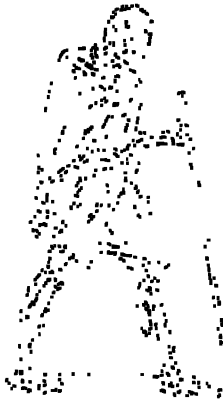
खादी-गीत

खादी के धागे धागे में
अपनेपन का अभिमान भरा,
माता का इसमें मान भरा
अन्यायी का अपमान भरा;

खादी के रेशे रेशे में
अपने भाई का प्यार भरा,
माँ-बहनों का सत्कार भरा
बच्चों का मधुर दुलार भरा;

खादी की रजत चंद्रिका जब
आकर तन पर मुसकाती है,
तब नवजीवन की नई ज्योति
अन्तस्तल में जग जाती है;

खादी से दीन विपन्नों की
उत्तप्त उसास निकलती है,
जिससे मानव क्या पत्थर की
भी छाती कड़ी पिघलती है;

खादी में कितने ही दलितों के
दग्ध हृदय की दाह छिपी,
कितनों की कसक कराह छिपी
कितनों की आहत आह छिपी!

खादी में कितने ही नंगों
भिखमंगों की है आस छिपी,
कितनों की इसमें भूख छिपी
कितनों की इसमें प्यास छिपी!

खादी तो कोई लड़ने का
है जोशीला रणगान नहीं,
खादी है तीर कमान नहीं
खादी है खड्ग कृपाण नहीं;

खादी को देख देख तो भी
दुश्मन का दल थहराता है,
खादी का झंडा सत्य शुभ्र
अब सभी ओर फहराता है!

खादी की गंगा जब सिर से
पैरों तक बह लहराती है,
जीवन के कोने-कोने की
तब सब कालिख धुल जाती है!

खादी का ताज चाँद-सा जब
मस्तक पर चमक दिखाता है,
कितने ही अत्याचार-ग्रस्त
दीनों के त्रास मिटाता है;

खादी ही भर भर देश प्रेम
का प्याला मधुर पिलायेगी,
खादी ही दे दे संजीवन
मुर्दों को पुनः जिलायेगी,

खादी ही बढ़ चरणों पर पड़
नूपुर-सी लिपट मनायेगी,
खादी ही भारत से रूठी
आजादी को घर लायेगी।
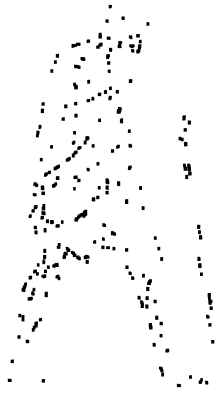
गाँवों में

जगमग नगरों से दूर दूर
हैं जहाँ न ऊँचे खड़े महल,
टूटे-फूटे कुछ कच्चे घर
दिखते खेतों में चलते हल;

फुरई पालों, खपरैलों में
रहिमा रमुआ के भावों में,
है अपना हिन्दुस्तान कहाँ?
वह बसा हमारे गांवों में!

नित फटे चीथड़े पहने जो
हड्डी-पसली के पुतलों में,
असली भारत है दिखलाता
नर-कंकालों की शकलों में;

पैरों की फटी बिवाई में,
अन्तर के गहरे घावों में,
है अपना हिन्दुस्तान कहाँ?
वह बसा हमारे गांवों में!

दिन-रात सदा पिसते रहते
कृषकों में औ' मजदूरों में,
जिनको न नसीव नमक-रोटी
जीते रहते उन शूरों में;

भूखे ही जो हैं सो रहते
विधना के निठुर नियावों में,
है अपना हिन्दुस्तान कहाँ?
वह बसा हमारे गाँवों में!

उन रात-रात भर, दिन-दिन भर
खेतों में चलते ढोलों में,
दुपहर की चना-चबेनी में
विरहा के सूखे बोलों में;

फिर भी, ओठों पर हँसी लिये
मस्ती के मधुर भुलावों में,
है अपना हिन्दुस्तान कहाँ?
वह बसा हमारे गाँवों में!

अपनी उन रूप कुमारी में
जिनके नित रूखे रहें केश,
अपने उन राजकुमारों में
जिनके चिथड़ों से सजे वेश;

अंजन को तेल नहीं घर में
कोरी आँखों के हावों में,
है अपना हि कहाँ?
वह बसा हमारे गाँवों में!

उस एक कुएँ के पनघट पर
जिसका टूटा है अर्ध भाग,
सब सँभल-सँभलकर जल भरते
गिर जाय न कोई कहीं भाग;

है जहाँ गड़ारी जुड़ न सकी
युग-युग के द्रव्य अभावों में,
है अपना हिन्दुस्तान कहाँ ?
वह बसा हमारे गाँवों में !

है जिनके पास एक धोती
है वही दरी, उनकी चादर,
जिससे वह लाज सँभाल सदा
निकला करतीं घर से बाहर,

पुर-वधुओं का क्या हो सिंगार ?
जो बिका रईसों-रावों में !
है अपना हिन्दुस्तान कहाँ ?
वह बसा हमारे गाँवों में !

सोने-चाँदी का नाम न लो
पीतल-काँसे के कड़े-छड़े।
मिल जायँ बहूरानी को तो
समझो उनके सौभाग्य बड़े !

राँगे की काली बिछियों में
पति के सुहाग के भावों में।
है अपना हिन्दुस्तान कहाँ ?
वह बसा हमारे गाँवों में !

रामायण के दो-चार ग्रन्थ
जिनके ग्रन्थालय ज्ञान-धाम,
पढ़-सुन लेते जो कभी कभी
हो भक्ति-भाव-वश रामनाम;

जगगति युगगति जिनको न ज्ञात
उन अपढ़ अनारी भावों में,
है अपना हिन्दुस्तान कहाँ?
वह बसा हमारे गाँवों में!

चूती जिनकी खपरैल सदा
वर्षा की मूसलधारों में,
ढह जाती है कच्ची दिवार
पुरवाई की बौछारों में;

उन ठिठुर रहे, उन सिकुड़ रहे
थरथर हाथों में पाँवों में,
है अपना हिन्दुस्तान कहाँ?
वह बसा हमारे गाँवों में!

जो जनम आसरे औरों के
युग-युग आश्रित जिनकी पीढ़ी,
जिनकी न कभी अपनी जमीन
मर-मिट जाये पीढ़ी-पीढ़ी;

मजदूर सदा दो पैसे के
मालिक के चतुर दुरावों में,
है अपना हिन्दुस्तान कहाँ?
वह बसा हमारे गाँवों में!

ऋण-भार चढ़ा जिनके सिर पर
बढ़ता ही जाता सूद-ब्याज,
घर लाने के पहले कर से
छिन जाता है जिनका अनाज;

उन टूटे दिल की साधों में
उन टूटे हुए हियाओं में,
है अपना हिन्दुस्तान कहाँ?
वह बसा हमारे गाँवों में!

खुरपी ले ले छीलते घास
भरते कोछों की कोरों में,
लकड़ी का बोझ लदा सिर पर
जो कसा मूँज की डोरों में;

उनका अर्जन व्यापार यही
क्या करें गरीब उपायों में?
है अपना हिन्दुस्तान कहाँ?
वह बसा हमारे गाँवों में!

आजीवन श्रम करते रहना,
मुँह से न किन्तु कुछ भी कहना,
नित विपदा पर विपदा सहना
मन की मन में साधें दहना;

ये आहें वे, ये आँसू वे
जो लिखे न कहीं किताबों में;
है अपना हिन्दुस्तान कहाँ?
वह बसा हमारे गाँवों में!

दो कौर न मुँह में अन्न पड़े
तब भूल जायँ सारी तानें,
कवि पहचानेंगे रूप-परी
नर-कंकालों को क्या जानें?

कल्पना सहम जाती उनकी
जाते इन ठौर कुठावों में,
है अपना हिन्दुस्तान कहाँ?
वह बसा हमारे गाँवों में!

हड्डी-हड्डी पसली-पसली
निकली है जिनकी एक-एक,
पढ़ लो मानव, किस दानव ने
ये नर-हत्या के लिखे लेख!

पी गया रक्त, खा गया मांस
रे कौन स्वार्थ के दाँवों में!
है अपना हिन्दुस्तान कहाँ?
वह बसा हमारे गाँवों में!

आँखें भीतर जा रहीं धँसी
किस रौरव का बन रहीं कूप?
लग गया पेट जा पीठी से
मानव? हड्डी का खड़ा स्तूप!

क्यों जला न देते मरघट पर
शव रखा द्वार किन भावों में?
है अपना हिन्दुस्तान कहाँ?
वह बसा हमारे गाँवों में?

जो एक प्रहर ही खा करक
देते हैं काट दीर्घ जीवन,
जीवन भर फटी लँगोटी ही
जिनका पीतांबर दिव्य वसन;

उन विश्व-भरण पोषणकर्त्ता
नर-नारायण के चावों में,
है अपना हिन्दुस्तान कहाँ?
वह वसा हमारे गाँवों में!

सेगाँव वनें सव गाँव आज
हममें से मोहन वने एक,
उजड़ा वृन्दावन वस जावे
फिर सुख की वंशी वजे नेक;

गूँजे स्वतंत्रता की तानें
गंगा के मधुर वहावों में।
है अपना हिन्दुस्तान कहाँ?
वह वसा हमारे गाँवों में!

झोपड़ियों की ओर

जिनके अस्थि-पंजरों की
नीवों पर ये प्रासाद खड़े,
जिनके उष्ण रक्त के गारे से
गढ़ डाले भवन बड़े;

जिनकी भूखों की होली पर
मना रहे तुम दीवाली,
जिनसे तुम उज्ज्वल! देखो,
उनकी देहें काली-काली;

उन भोले-भाले कृषकों की
करुण कथाओं पर पिघलो!
महलों को भूलो प्यारे!
अब झोपड़ियों की ओर चलो!

उनके फटे चीथड़े देखो
अपने वस्त्र विभवशाली,
उनकी रोटी-नमक निहारो
अपनी खीर-भरी थाली;

उनके छूंछे टेंट निहारो
अपनी वसनी धनवाली,
उनके सूखे खेत निहारो
अपनी उपवन-हरियाली!

यह अन्याय अनीति मिटाओ
युग-युग का दुख दैन्य दलो।
महलों को भूलो प्यारे!
अब झोपड़ियों की ओर चलो!
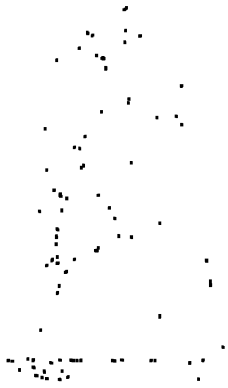
हलधर से

देखो, हुआ प्रभात, उधर
प्राची में है लाली छाई,
जगो किसानो आज तुम्हारे
जगने की बेला आई।

हिन्दुस्तान बसा है तुम में
क्या तुम हो इससे अनजान?
जब तक तुम न जगोगे, तब तक
नहीं जगेगा हिन्दुस्तान.

गाँवों में पुरई पालों में
आज जागरण-शंख बजे,
चले तुम्हारी टोली प्यारे!
तब भारत की सैन्य सजे।

जगा रहा युग, जगा रहा जग
जागो हे सोये भाई,
जगो किसानो आज तुम्हारे
जगने की बेला आई।

तुम्हें नहीं क्या ज्ञात? तुम्हारे
बल पर चलते हैं शासन,
तुम्हें नहीं क्या ज्ञात? तुम्हारे
धन पर निर्भर सिंहासन।

तुम्हें नहीं क्या ज्ञात तुम्हारे
श्रम पर सब वैभव साधन,
तुम्हें नहीं क्या ज्ञात तुम्हारी
बलि पर है सब विजय-वरण।

करुणा है यह सभी तुम्हारी
जो वसुधा है हरियाई,
जगो किसानो आज तुम्हारे
जगने की बेला आई।

तुम्हें नहीं क्या ज्ञात तुम्हीं हो
जननी की अगणित संतान?
तुम्हें नहीं क्या ज्ञात तुम्हीं पर
निर्भर है अपना उत्थान।

तुम्हें नहीं क्या ज्ञात राष्ट्र के
तुम हो कर्मठ कर्णधार,
बिना तुम्हारे उठे न उठ
सकती है उन्नति की मीनार।

पौ फट चुकी छूट गए तारे
किरणें हैं भू पर छाईं,
जगो किसानो आज तुम्हारे
जगने की बेला आई।

मुसलिम सिक्ख पारसी
जैन, बुद्ध या हो क्रिस्तान,
कोटि कोटि हो तुम्हीं धीरधर
अपनी जननी की सन्तान।

हल है झंडा सदा तुम्हारा
हल के गाओ गौरव गान,
हल से हल हों सभी समस्या
सहल बने अपना मैदान!

चलो आज तुम कोटि कोटि मिल
वही जागरण-पुरवाई,
जगो किसानो आज तुम्हारे
जगने की बेला आई।

हल के बल पर तुम उगाते
ऊसर में भी गेहूँ धान,
हल के बल पर तुम देते हो
क्षुधित तृषित को जीवन दान।

हल का पूजन करो आज फिर
हल की उठे निराली शान,
हल से हल हों सभी समस्या
हलका होवे भार महान!

हल के गाओ गीत निराले
बढ़ो विजय वरने आई।
जगो किसानो आज तुम्हारे
जगने की बेला आई।

चले तुम्हारा हल धरणी में
लिखे तुम्हारे बल के लेख,
शस्य श्याम जो भी लहराता
श्रमसीकर की जिन दर रेख।

चले तुम्हारा हल धरणी में
ऊसर बनें खेत खलिहान,
कूड़े का भी भाग्य जग उठे
अन्नराशि हो वहाँ महान।

दीन न निर्धन तुम रह सकते
साहस ने ही जय पाई
जगो किसानो आज तुम्हारे
जगने की बेला आई!

कितने भोले हो ग़रीब हो
इसका तुमको जरा न ध्यान,
अपनी ही अज्ञान दशा में
पाते हो तुम कष्ट महान।

तुम अपने को पहचानो तो
फिर न रहेगा यह दुःख दैन्य,
निर्बल की सब बलि देते हैं
बली सजाते हैं रण सैन्य।

देख रही माता अधीर हो
उठो लाल जागो भाई।
उठो किसानो आज तुम्हारे
जगने की बेला आई।

किसान

ये नभ-चुम्बी प्रासाद भवन,
जिनमें मंडित मोहक कंचन,
ये चित्रकला-कौशल-दर्शन,
ये सिंह-पौर तोरन वन्दन,

गृह—दकगनें जिनमें विमान,
गृह-जिनका सब आनंद मान,
जिन उनका समझें धन्य प्राण,
ये आन-बान, ये सभी शान,

वह तेरी दौलत पर किसान!
वह तेरी मेहनत पर किसान!
वह तेरी हिम्मत पर किसान!
वह तेरी ताकत पर किसान!

ये रंग-महल, ये मान-भवन,
ये लीलागृह, ये गृह-उपवन,
ये क्रीड़ागृह, अन्तर प्रांगण,
रनिवास खास, ये राज-सदन,

ये उच्च शिखर पर ध्वज निशान,
ड्योढ़ी पर शहनाई सुतान,
पहरेदारों की खर कृपाण,
ये आन-बान, ये सभी शान,

वह तेरी दौलत पर किसान!
वह तेरी मेहनत पर किसान!
वह तेरी हिम्मत पर किसान!
वह तेरी ताकत पर किसान!

ये नूपुर की रुनझुन रुनझुन,
ये पायल की छम छम छम धुन,
ये गमक, मीड़, मीठी गुनगुन,
ये जन-समूह की गति मनमन,

ये मेहमान, ये मेजमान,
साकी, सुराही का समान,
ये जल्सा महफ़िल, समाँ, तान,
ये करते हैं किस पर गुमान?

वह तेरी दौलत पर किसान!
वह तेरी मेहनत पर किसान!
वह तेरी रहमत पर किसान!
वह तेरी ताकत पर किसान!

चलतीं शोभा का भार लिये,
अंगों का तरुण उभार लिये,
नखशिख सोलह शृंगार किये,
रसिकों के मन का प्यार लिये,

वह रूप, देख जिसको अजान,
जग सुध-बुध खोता हृदय-प्राण,
विधि की सुन्दरता का बखान,
प्राणों का अर्पण प्रणय-गान,

वह तेरी दौलत पर निशान!
वह तेरी मेहनत पर निशान!
वह तेरी हिकमत पर निशान!
वह तेरी किस्मत पर निशान!

यमुना के तट पर ताजमहल
जो खड़ा प्रेम का राज महल
दे गई रूप मुमताज महल,
अभिनव सा लगता आज महल,

ये कलाकार, कौशल निधान,
जिन ने इन पर दे दिए प्राण,
ये जीवित वैभव के निशान,
जिनसे भारत अब भी महान!

वह तेरी दौलत पर निशान!
वह तेरी मेहनत पर निशान!
वह तेरी हिम्मत पर निशान!
वह तेरी ताकत पर निशान!

सभ्यता तीन बल खाती है,
इठलाती है, इतराती है,
शिष्टता लंक लचकाती है,
झुक झूम भूमि रज लाती है,

नम्रता, विनय, अनुनय, महान,
सज्जनता, मधुर स्वभाव वान;
आगत-स्वागत, सम्मान-मान,
सरलता, शील के विशद गान,

वह तेरी दौलत पर किसान!
वह तेरी मेहनत पर किसान!
वह तेरी रहमत पर किसान!
वह तेरी कुव्वत पर किसान!

शूरों-वीरों के बाहुदंड,
जिनमें अक्षय बल है प्रचंड,
ये प्रणवीरों के प्रण अखंड,
जो करते भूतल खंड-खंड,

ये योद्धाओं के धनुष-बाण,
ये वीरों के चमचम कृपाण,
ये शूरों के विक्रम महान,
ये रणवीरों की विजय-तान,

वह तेरी दौलत पर किसान!
वह तेरी मेहनत पर किसान!
वह तेरी रहमत पर किसान!
वह तेरी ताकत पर किसान!

ये मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर,
पादरी, मौलवी, पण्डितवर,
ये मठ, विहार, गद्दी, गुरुवर,
भिक्षुक, संन्यासी, यतीप्रवर,

जप-तप, व्रत-पूजा, ज्ञान-ध्यान,
रोज़ा-नमाज़, वहदत, अजान,
ये धर्म-कर्म, दीनो-इमान,
पोथी पुराण, कलमा-कुरान,

वह तेरी दौलत पर निशान !
वह तेरी मेहनत पर निशान !
वह तेरी न्यामत पर निशान !
वह तेरी बरकत पर निशान !

ये बड़े-बड़े साम्राज्य-राज,
युग-युग से आते चले आज,
ये सिंहासन, ये तख्त-ताज,
ये किले दुर्ग गढ़ अस्त्र-साज,

इन [illegible] की ऊँची मचान,
इन भवनों की नींवें महान,
इनकी दीवारों की उठान,
इनकी मीनारों की उड़ान,

वह तेरी हड्डी पर निशान !
वह तेरी पसली पर निशान !
वह तेरी आंतों पर निशान !
नस की तांतों पर ये निशान !

यदि हिल उठ तू ओ शेषनाग !
हो ध्वस्त पलक में राज्य-भाग,
सम्राट् निहारें, नींद त्याग,
है कहीं मुकुट तो कहीं पाग !

सामन्त भग रहे बचा जान,
सन्तरी भयाकुल, लुप्त ज्ञान,
सेनायें हैं ढूंढ़ती त्राण;
उड़ गये हवा में ध्वज-निशान !

साम्राज्यवाद का यह विधान,
शासन-सत्ता का यह गुमान,
वह तेरी रहमत पर किसान !
वह तेरी गफलत पर किसान !

माँ ने तुझपर आशा बाँधी,
तू दे अपने बल की काँधी;
ओ मलय पवन बन जा आंधी,
तुझमें ही गांधी है गांधी,

तुझमें सुभाष है भासमान,
तुझमें मोती का बड़ा मान;
तू ज्योति जवाहर की महान,
उड़ता नभ पर अपना निशान,

वह तेरी ताकत पर किसान !
वह तेरी कुव्वत पर किसान !
वह तेरी जरअत पर किसान !
वह तेरी हिम्मत पर किसान !

कल्पना पंख फैलाती है,
छू छोर क्षितिज के आती है,
भावना डुबकियां खाती है,
सागर मथ अमृत लाती है,

ये शब्द विहग से गीतमान,
ये छन्द मलय के धावमान,
प्रतिभा की डाली पुष्पमान,
तनता है कविता का वितान,

वह तेरी दौलत पर निशान !
वह तेरी मेहनत पर निशान !
वह तेरी हिम्मत पर निशान !
वह तेरी ताकत पर निशान !

मज़दूर

पृथ्वी की छाती फोड़
कौन ये अन्न उगा लाता बाहर ?
दिन का रवि, निशि की शीत
कौन लेता अपने सिर आँखों पर ?

कंकड़ पत्थर से लड़ कर के
खुरपी से और कुदाली से,
ऊसर बंजर को उर्वर कर
चलता है चाल निराली ले !

मज़दूर ! भुजायें वे तेरी
मज़दूर शक्ति तेरी महान,
घूमा करता तू महादेव
सिर पर लेकर के आसमान !

पाताल फोड़कर महाभीष्म
भूतल पर लाता जलधारा,
प्यासी भूखी दुनिया को तू
देता जीवन संबल सारा

खेती से लाता है कपास
धुन धुन बुन कर अंबार परम,
इस नग्न विश्व को पहनाता
तू नित्य नवीन वस्त्र अनुपम।

घूमा करती नंगी दुनिया
मिलता न अन्न भूखों मरती,
मज़दूर! भुजायें जो तेरी
मिट्टी में नहीं यत्न करतीं।

तू छिपा राज्य उत्थानों में,
तू छिपा कीर्ति के गानों में,
मजदूर! भुजायें तेरी ही
दुर्गों के शृंग उठानों में।

तू छिपा सबल निर्माणों में
गीता में और पुराणों में,
युग का यह चक्र चलता रहता
तेरी पद-गति की तानों में।

तू ब्रह्मा विष्णु रहा सदैव
तू है महेश प्रलयंकर फिर!
हो तेरा तांडव शंभ आज
हो ध्वंस, सृजन मंगलकर फिर।

दांडी-यात्रा

पूछता सिंधु था लहरों से
क्यों ज्वार अचानक तुम लाईं?
लहरें बोलीं—क्या मनमोहन की
वेणु न तुमने सुन पाई?

रण-यात्रा में है चला आज
वृन्दावन का वंशीवाला।
बोला तब लवण-सिंधु पूजूँ,
लावण्यमयी जा कुछ ले आ।

लहरें बोलीं, तट पर आकर
देखो, वह टोली है आई।
उद्ग्रीव सिंधु हो उठा मगर
कैसी बांकी झांकी छाई?

सबसे आगे फहराता था
जय-ध्वजा, तिरंगा ध्वज प्यारा।
पीछे बजती थी बीन मधुर
वंशी सितार का स्वर न्यारा।

पूछा तरुओं ने आस-पास
यह है किस आसव की यात्रा?
तब काली कोयल कुहुक उठी
यह बापू की दांडी-यात्रा!

किस तरह चले, ये कौन चले,
कब कहाँ चले बोलो रानी।
सागर ने पूछा लहरों से
कुछ तो बतलाओ कल्याणी।

लहरों ने मर्मर स्वर भर कर
बन ऊर्मि कथा मधु-भरी कही।
ओ, पारावार अपार, सुनो
इस यात्रा की कुछ बात नई।

जब ब्रिटिश राज्य के दूतों ने
कुछ भी न न्याय का मत माना,
अन्याय भंग करने को तब
बापू ने यह रण-प्रण ठाना।

आश्रम में शोर हुआ सहसा
कल प्रात समर-यात्रा होगी,
जिसको चलना हो चले साथ
जो हो अपने घर का योगी।

हलचल-सी फैल गई पल में
जागी फिर सावरमती रात,
वीरों का सजने लगा संघ
होगा पावन प्रस्थान प्रात।

कब सोया कौन कहाँ निशि में
सबने उमंग के साज सजे,
नंगे फकीर के कुछ चेले
मतवालों ने पर्यंक तजे।

पति से यों पत्नी ने पूछा
हे नाथ साथ ले चलो मुझे।
पगली! तेरा कुछ काम नहीं,
घर रहना ही कर्त्तव्य तुझे।

तुम जाओगे क्या एकाकी
मैं रह न सकूँगी एकाकी,
बोली यों पति से फिर पत्नी
अपनी कटाक्ष को कर बाँकी।

पति गले लगी पत्नी पुलकित
मन में उत्साह अतुल उमंग,
त्यागा कर सुख-वैभव विलास
ले ब्रह्मचर्य का व्रत अभंग।

भाई बहनों के पास गये
बोले, बहनो! दो विदा आज,
अपने मंगल जल अक्षत से
दो मेरे प्रण का कवच साज।

बहनें बोलीं भैया न बनेगा
यह एकाकी मौन गमन,
हम भी पीछे-पीछे पद पर
अनुगमन करेंगी मंदचरण।

भाई-बहनें चल पड़ीं संग
था रंग उमंगों में गहरा,
उन्मनता ने मौन न किया
जागृति ने किया मगर पहरा।

जननी के श्रीचरणों में पड़
बोले बेटा, दो विदा आज
माता के आंचल में स्नेह
का सागर उमड़ा दूध-ब्याज।

जननी के उर का गर्व जगा
मां के उर का अभिमान जगा,
तू धन्य पुत्र! जो जननी के
हित बढ़ा यज्ञ में प्रभागता।

मां ने बेटे के मस्तक पर
रोचना किया अक्षत छोड़,
आशीर्वाद वरदान प्राप्त कर
चले वीर साहस जोड़।

चल पड़ी बहन, चल पड़े संग,
चल पड़ी जननि, चल पड़े पुत्र,
पति चले चली पत्नी उनकी
जुड़ गया स्नेह का सरस सूत्र.

कुछ चले किशोर-किशोरी भी
बापू के प्यार-भरे छौने,
कर्त्तव्य-गोद में खेल रहे
वात्सल्य-भाव के मृग-छौने।

क्या कहूँ वेश उनका सुन्दर,
मस्तक पर थी अक्षत-रोली,
अधरों पर थी मुस्कान मन्द
आँखों में रण-प्रण की होली।

खादी की साड़ी बहन सजीं
खादी के कुर्ते बन्धु सजे,
चप्पल चरणों में समर साज
रण दुंदुभि बन जो सतत बजे।

खादी के ताज सजे सिर पर
केसरिया पागों से बढ़कर,
ज्यों चाँद सैकड़ों उग आये
अवनी पर, भू के अंबर पर।

बच्चों, बूढ़ों, माँ-बेटों की
बहनों-भाई की यह टोली,
झूमती चली मतवाली बन
उर पर खाने गोला-गोली।

बापू ले अपनी चिर-संगिनि
जो है उनकी लघु-सी लकुटी,
चल पड़े सुदृढ़पग, सुदृढ़बाहु
दृढ़ कर अपनी सीधी भृकुटी।

नतमस्तक, उन्नत गर्व लिये
नतनयन, स्नेह के भार झुके।
कटि कसे कछौटी खादी की
आजानबाहु जो नहीं रुके।

उस दिन भारत के कोटि-कोटि
देवता सुमन अंजलि भर-भर
बरसाने आये यान चढ़े
देखा न किसी ने उनको पर।

रुक गये जहाँ, झुक गये वहीं
कितने ही पुर औ' ग्राम-नगर
पुर-वधुओं से बधुएँ बोलीं,
आये हैं बापू नयनागर।

ले दूध दही, ले पुष्प-पत्र
ले फल अहार, वृद्धा आईं,
बापू के चरणों में सम्पत्ति
की राशि झुकी, बलि हो आईं।

बन गया समर का क्षेत्र वही
जिस स्थल बापू के चरण रुके,
जुड़ गई सभा नर-नारी की
लग गई भीड़, तरु-पात झुके।

कांप उठीं दिशायें नीरव हो
छा गया एक स्वर निर्विकार
भारत स्वतंत्र करने का प्रण
है यही, यही, रण-मोक्ष-द्वार।

या तो होगा भारत स्वतंत्र
कुछ दिवस रात के प्रहरों पर,
या, शव बन लहरेगा शरीर
मेरा समुद्र की लहरों पर।

वह अचल प्रतिज्ञा गूंज उठी
तरुओं में पातों पातों में,
वह अटल प्रतिज्ञा समा गई
जनगण की बातों बातों में।

बरसाने की आ गई याद
धरसाने की उस यात्रा में।
हो गया ध्वंस साम्राज्य-बंध
जब लवण बना लघु मात्रा में।

नवयुग का नव आरंभ हुआ
कुछ रवे नमक के टुकड़ों पर।
आजादी का इतिहास लिखा
दांडी के कंकड़-पत्थरों पर।

अनुरोध

साबरमती आश्रमवाले !
ओ दांडी यात्रा वाले !
यह वर्षा में कौन मौन व्रत
ले बैठे ओ मतवाले ?
इधर आओ, बतलाओ राह,
हो रहे कोटि कोटि गुमराह।

हमें त्याग कर तुम बैठे
तब कहो कहाँ हम जायें ?
भूल रहे हैं, भटक रहे हैं,
कब तक अब भरमायें ?
करो पूरी इतनी सी साध,
आज तुम क्षमा करो अपराध !

तुम मत चूको, चूक जायं हम
हम तो हैं नादान,
तुम मत भूलो, भूल जायं हम
हम तो हैं अनजान।
'नहीं', तुम और कहो मत नहीं,
कहोगे जहाँ, मिलेंगे वहीं !

सही नहीं जाती है हमसे
और अधिक नाराजी
बापू बोलो कहाँ लगा दें
इन प्राणों की बाजी !
हमारी मिट जायेगी पीर,
चलो हाँ चलो गोमती तीर !

सेवाग्राम की आत्मकथा

वर्धा में बापू का निवास
अब कहते जिसको महिलाश्रम,
क्या देख रहे थे उन्मन हो
नभ में घन के घिरने का क्रम ?

घन विकल घूमते अंबर में
कैसे बरसावें वे जीवन ?
बापू हैं आश्रम में आकुल
कैसे लावें वे नवजीवन ?

बिजली है रह रह कौंध रही
घनमाला के अंतस्तल में,
संकल्प विकल्प उभर उठते
हैं बापू के हृदयस्थल में—

'वे नगर विभव वैभव बंधन में
चाह रहे हैं कसना मन,
मैं चला तोड़ने ये कड़ियाँ,
आ रहा ग्राम का आमंत्रण।'

आ रही ग्राम की सरलवायु
कहती आओ हे मनमोहन!
तुम बहुत रह चुके नगरों में
देखो मेरे भी गृह आँगन!'

आओ तुम पुरइन-तालों में
आओ छप्पर खपरैलों में,
आओ फूसों की कुटियों में
कुम्हड़े कद्दू की बेलों में।

आओ कच्ची दीवारों में
निर्मित घर की चौपालों में
रहते हैं दीन किसान जहाँ
जामुन महुआ के थालों में।

आओ नवजीवन के प्रभात!
आओ नवजीवन की किरणें
इन ग्रामों का भी भाग्य जगे
ये भी पत्तन को वरणें।

ये ग्राम उगाते अन्न धान,
वे नगर प्रेम से चखते हैं,
जो कृषक उगाते साग पात
वे नगर लूटते रहते हैं।

दधि दूध और घृत की नदियाँ
ये नगर पिये ही जाते हैं!
भूखे रहकर, नंगे रह कर
ये ग्राम जिये ही जाते हैं!

कुछ मूल, सूद दर सूद लगा
गृह छीन लिए ही जाते हैं,
चिकनी चुपड़ी बातें कहकर
रे घाव सिये ही जाते हैं!

निशिदिन है हाहाकार मचा
कैसा यह अत्याचार मचा?
निर्धन को धनी खा रहे हैं
यह बर्बर नर-संहार मचा!

वैभव विलास के उच्च नगर
हैं तुम्हें उधर ही खींच रहे,
फैला कर इन्द्रजाल अपना
अन्तर के कोमल मौन रहे!

ओ आत्मभावना के यात्री!
तेरा पावन आवास यहाँ,
निर्मल नभ, धरणी हरित जहाँ
चलती है वायु सुवास जहाँ।

भोले भाले सच्चे किसान
तुमको न कभी भटकायेंगे,
अपने खेतों खलिहानों का
वे तुमको गुन सुनायेंगे।

कैसे कटती है रात, दिवस
कैसे तुमको समझावेंगे,
हे ग्रामदेवता! ग्राम तुम्हें
पाकर कृतार्थ हो जावेंगे।

आओ नवयुग के निर्माता!
आओ नवपथ के निर्माता!
आओ नवयुग के निर्माता!
आओ नवजीवन के दाता!

हैं क्षीण शीर्ण ये ग्राम
जहाँ युग-युग से छाया अंधकार,
ये रौरव भव में बसे हुए,
सुन लो तुम इनकी भी गुहार।

घन चले फूट कर बरस पड़े
झरने अमृत से सब सागर,
बापू भी आश्रम से बाहर
वह चली किधर गंगा धारा?

घन लगे बरसने रिमझिम रिमझिम,
कुछ हुआ और भी अंधकार,
वह चला प्रभंजन भी सन सन
बिजली चमकी के छोर अपार।

बापू कटि-बद्ध चले आश्रम
को त्याग, व्यग्र आश्रमवासी!
इस समय कहाँ इस अवसर में
जाते हैं अपने अधिवासी?

आश्रमवासी चिंतित व्याकुल
कहते जाने का यह न समय,
'विश्राम करो बापू! चलना प्रातः
जब हो शुभ अरुणोदय!'

दुर्दिन है, सुदिन नहीं है यह
हम सभी चलेंगे साथ संग,
एकाकी जायँ न आप कहीं
तम सघन, गगन का श्याम रंग

पर सुनते कब किसकी बापू
वे सुनते आत्मा की पुकार,
वे सुनते निज प्रभु की पुकार
चल पड़ते खुलता जिधर द्वार!

रह गई विनय अनुनय करती
पर, कहाँ किसी की वे मानें?
वे चले आज एकाकी ही
उन्नत ललाट, सीना ताने!

कर में लेकर अपनी लकुटी
तन में मोटा उजला कंबल,
दृढ़ दृष्टि, सुदृढ़ प्रगति पुष्ट,
देने को ग्रामों को संबल!

वे चले स्वयं घन गर्जन में,
विद्युत् के अविचल वर्जन में,
प्रलयंकर भीम प्रभंजन में,
जलनिधि के भीषण तर्जन में!

रह गए देखते खड़े सभी
चित्रित से, जड़ित, चकित, विस्मित!
कितने दुर्जय निर्भय हैं ये
यह भी विभूति प्रभु की विकसित!

बापू आश्रम से दूर दूर थे
बहुत दूर अपनी धुन में,
जा रहे चले गंभीर शान्त
आत्मा के मधुमय गुंजन में।

बह रहा प्रभंजन था रह रह,
बापू बढ़ते आगे गह गह,
बाधाओं की शिलाओं की
प्राचीरें जाती थीं ढह ढह!

बिजली बन करती झंकार
बापू के उर में गरजती थी,
घन थे प्रमत्त, अमृत जल था,
वंशी स्वागत की बजती थी।

ग्रामों की उत्सुक आंखें लगी थीं
अपने सब अभ्यागत पर,
किसको सौभाग्य प्रदान करें
सब उत्कंठित थे स्वागत पर!

पथ की लतिकाएँ फूल रहीं
फूलों के घट थीं साज रहीं,
मधु भर कर के मंगल पथ में
प्रतिहारी बनी विराज रहीं।

मन में प्रसन्न खगमृग अतीव
वरदान उन्होंने पाया था,
आज ही अहिंसा का स्वामी
गृह तजकर बन में आया था।

थे मुदित मयूर मयूरी मिल
झिलमिल कर गरवा नाच रहे,
सुरधनु से पंख खोल अपने
निज भाग्य-पृष्ठ थे बाँच रहे।

कर्कश कठोर भी भूमि बनी
करुणा जल पा करके कोमल,
बापू प्रसन्न उन्मुक्त सबल
थे चले जा रहे उच्छृंखल।

झंझा की इधर झकोरें थीं
हिमगिरि पर उधर महान चला,
वर्षा की बूँदें थीं अजस्र
पर उधर भीम तूफ़ान चला।

ग्रामों का नव उत्थान चला,
यह भव का नव निर्माण चला !
पद दलितों का अरमान चला,
आत्माहुति का बलिदान चला।

थे चरण चिह्न बनते पथ में
दृढ़ पुष्ट चरण, मिट्टी धँसती,
इतिहास लिख रही थी दुनिया
थी आज नई धरती बनती !

कितनी ही आँखें बिछ पथ पर
थी पदरज ले धरती शिर पर,
वनबालायें बन घूम घूम
गाती थीं गायन मादक स्वर !

बापू चल आये दूर
जहाँ निर्जन वन था एकांत प्रांत,
था गाँव एक सेगाँव
जहाँ दो चार धाम थे खड़े शांत !

जैसे ग्रामों के प्रतिनिधि बन
वे हों स्वागत में सावधान ?
सौभाग्य समझ अपने गृह का
ले गए उन्हें गृह में किसान !

बीती वह रात वहीं उन
कुटियों में जब पुण्य प्रभात हुआ,
देखा दुनिया ने वहीं एक
था मधुर ग्राम नवजात हुआ।

सेवाग्राम

वर्धा से दूर सुदूर वसा है
एक मनोहर मधुर ग्राम,
जिसका है सेवाग्राम नाम
हैं जिसमें लघु लघु वने धाम।

है यही देश का हृदय तीर्थ
है यही देश का हृदय प्राण,
हैं उठते यहीं विचार दिव्य
जो करते जनगण राष्ट्र-त्राण।

नवयुग के नये विधाता की
यह है अजीब छोटी बस्ती,
जिसमें नवीन जीवन का क्रम
जिसमें नवीन दुनिया हँसती।

यह तपोभूमि, यह कर्मभूमि
यह धर्मभूमि है तेजमयी,
जिसमें सुलझाई जाती हैं
सब जटिल ग्रन्थियाँ नई-नई।

यह है हिमाद्रि उत्तुंग धवल
जिससे वहकर गंगा धारा,
है हरा भरा उर्वर करती
भारत का गृह आँगन सारा।

है यहीं मौर्यमंडल जिसके
चारों ही ओर प्रकाशपुंज,
करते रहते हैं परिक्रमा
माजते दिव्य आरती कुंज।

लेकर प्रकाश की रश्मि कर्म की
गतिविधि रति मति का संबल,
अगणित नक्षत्र उदित होते
सुंदर स्वदेश नभ में निर्मल।

वह शक्ति-केन्द्र, प्रेरणा-केन्द्र,
अर्चना-केन्द्र, साधना-केन्द्र,
वंदन अभिनंदन करते हैं
जिसमें आकर नर औ' नरेन्द्र।

है यहीं मूर्ति वह तपोमयी
जो देती रह-रह नवल स्फूर्ति,
इस देश अभागे की झोली
भरती है संबल नवल पूर्ति,

वह मूर्ति जिसे कहते बापू
गांधी, मनमोहन, महात्मा,
रहती है यहीं, यहीं रहती
जगती प्रणम्य वह युग-आत्मा।

गीत

ऊषा के मधुमय अंचल में।

सुन पड़ती है घंटा-ध्वनि घन,
उठ पड़ते आश्रमवासी जन,
प्रार्थना समय आता पावन;
चल पड़ते सब पूजास्थल में
ऊषा के मधुमय अंचल में।

बापू की कुटिया के समीप,
आ जुड़ती जनता औ' महीप,
खिलता भक्तों का एक द्वीप,
उठता है अमृत-स्वर पल में
ऊषा के मधुमय अंचल में

प्रातस्स्मरामि वह आत्म-तत्त्व,
सच्चित्सुख जिसका है महत्त्व,
हम उसी ब्रह्म के शुद्ध सत्त्व,
केवल न धूलिकण भूतल में
ऊषा के मधुमय अंचल में।

छाती है उर में महा शान्ति,
हटती है उर की महा भ्रान्ति,
फटती युगयुग की चिर अशांति,
खिलता प्रकाश अंतस्तल में।
ऊषा के मधुमय अंचल में।

रह रह बापू की तपोमूर्ति,
तन मन में देती नई स्फूर्ति,
होती अभाव की मधुर पूर्ति,
जीवन के इस सुवर्ण पल में.
ऊषा के मधुमय अंचल में।

खिचता है सहसा वही चित्र,
ज्यों बोधिसत्त्व बैठे पवित्र,
पदतल सेवक जनता विचित्र,
सब मंत्र मुग्ध शवमंगल में।
ऊषा के मधुमय अंचल में।

प्राणों का कल्मष पिघल पिघल,
चाहना भागना निकल निकल,
वह रश्मि फूटती है निर्मल,
पथ दिखलाता कोलाहल में।
ऊषा के मधुमय अंचल में।

वह पुण्यवान वह भाग्यवान,
जिसने यह क्षण पाया महान,
जब प्रभु उर में हों भासमान,
बल आ जाता है निर्बल में।
ऊषा के मधुमय अंचल में।

भ्रमण

संध्या की स्वर्णिम किरणें जब
ढल छा जाती हैं तरुओं पर,
कुछ कलरव करते सा उड़ते
खगकुल तृण चुन चुन अपने घर।

गोधूलि बनी संध्या समीर
पथ में उड़ती है कभी कभी,
लौटते कृषक खलिहानों से
कंधे धर हल पुर बस्त्र सभी।

तब चलती है टोली पथ में
कुछ इने गिने मस्तानों की,
घूमने साथ में बापू के
आज़ादी के दीवानों की।

'लो चलो घूमनेवाले सब'
बापू कहते आकर बाहर,
सुनकर वाणी आश्रमवासी
आते कितने ही नारी नर।

कुछ नन्हें नन्हें बच्चे भी
आकर कहते हैं मचल मचल,
बापू जी साथ चलेंगे हम भी
आगे बढ़कर उछल-उछल।

मातायें कहतीं चल न सकेगा,
खेल अभी बेटा! घर में,
बापू कुछ कदम चला देते
शिशु का कर लेकर निज कर में।

आँसू आते हैं नहीं कभी
है हँसी खेलती अधरों पर,
वह जादू बापू कर देते
बच्चों से बातें कर मनहर;

यों ही औरों को भी तो वे
चलना भव पथ में सिखलाते,
सब चलते हैं दो-चार क़दम
फिर शिशु से पीछे रह जाते।

शिशु सोचा करता खड़ा खड़ा
वह थोड़ा और बड़ा होता,
तो साथ-साथ चलता बापू के
यों न कभी पिछड़ा होता।

चलते अनेक हैं साथ-साथ
कुछ ही तो ठी हैं चल पाते,
कुछ पहले ही, कुछ बीच,
अंत में कुछ कुछ पीछे रह जाते।

यह भ्रमण खोल सा देता है
उनके जीवन का गहन मर्म,
जो साथ चल सकें बापू के
दो चार नित्य जो निरत-कर्म।

कितनी गति इनकी तीव्र
चले तब चले, नहीं रोके रुकते,
कुछ भी आये सामने, शीत
हिम, विघ्न, कहाँ पर ये झुकते !

इनके चरणों में ही चल चल
इस गिरे राष्ट्र को बढ़ना है,
जिस ओर चले जनगणनायक
घाटी पर्वत पर चढ़ना है।

बापू ! न चलो तुम इस गति में
जिससे न सभी जन बढ़ पायें,
अग्रणी ! अकेले पहुँचो तुम
सब जनगण यहीं पिछड़ जायें।

जब चलो चलो इस गति मति में
हम भी चरणों में चल पायें,
इस तिमिरावृत्त भारतनभ में
नवजीवन का प्रभात लायें;

है जिनका निश्चित ध्येय,
स्पष्ट है मार्ग, और साधन निर्मल,
उनके चरणों के अनुगामी
होंगे यात्रा में क्यों न सफल?

सेगांव का सन्त

विभु का पावन आदेश लिये,
देवों का अनुपम देश लिये,
यह कौन चला जाता पथ पर
नवयुग का नव संदेश लिये ?

युग-युग का घनतम है भगता,
प्राची में नव प्रकाश जगता;

एशिया खंड की दिव्य भूमि
शोभित है दिव्य प्रवेश लिये,
यह कौन चला जाता पथ पर
नवयुग का नव संदेश लिये ?

पग-पग में जगमग उजियाली
वन-वन लहराती हरियाली;

करुणावतार फिर क्या आये
करुणा का दान अशेष लिये
यह कौन चला जाता पथ प
नवयुग का नव संदेश लिये !

क्या ग्राम-ग्राम, क्या नगर-नगर,
नवजीवन फैला डगर-डगर;
ये कोटि-कोटि चल पड़े किधर ?
नवयौवन का आवेश लिये।
यह कौन चला जाता पथ पर
नवयुग का नव संदेश लिये ?

कर में रण-कंकण हथकड़ियाँ,
पहनीं इसने माणिक-मणियाँ;
वैकुंठ बन गया बन्दीगृह
जो था रौरव के क्लेश लिए।
यह कौन चला जाता पथ पर
नवयुग का नव संदेश लिये ?

किसने स्वतन्त्रता की आगी,
पग-पग मग-मग में सुलगा दी ?
नस-नस में धधक उठी ज्वाला
मर मिटने का उन्मेष लिये,
यह कौन चला जाता पथ पर
नवयुग का नव संदेश लिये ?

साम्राज्यवाद के दुर्ग ढहे,
शासन-सत्ता के गर्व बहे;
जनसत्ता है जग पड़ी आज
किसका वरदान विशेष लिये ?
यह कौन चला जाता पथ पर
नवयुग का नव संदेश लिये ?

रच आत्माहुति का महायज्ञ
प्रण पूर्ण कर रहा कौन प्रज्ञ ?

फहरा अंबर में सत्यकेतु
दिशि दिशि के छोर प्रदेश लिये ;
यह कौन चला जाता पथ पर
नवयुग का नव संदेश लिये ?

वह मलय पवन, वह है आंधी
वह मनमोहन, वह है गांधी ;

झुकता हिमाद्रि जिसके पदतल
अपना गौरव निःशेष लिये ।
वह आज चला जाता पथ पर
नवयुग का नव संदेश लिये !

सत्याग्रही

आज चली है सेना फिर से
धीर वीर मस्तानों की,
आज़ादी के दीपक पर है
भीड़ लगी परवानों की।

मनमोहन है शंख बजाता
कुरुक्षेत्र में हलचल है,
वर्धा के आँगन में सजता
फिर शूरों का दल बल है।

चले जवाहर से नरनाहर
बनने बंदी दीवाने,
औ' आज़ाद कफ़न को लेने
पीने विष के पैमाने।

कौन रोक सकता टोली
आगे बढ़ते दीवानों की?
आज चली है सेना फिर से
धीर वीर मस्तानों की!

वे कल थे आज हम जागे
परसों उनकी बारी है,
दर-दर में उत्सव अनुपम है
घर-घर में तैयारी है।

मिला सुयोग यशों में हमको
माँ के पद का पूजन है,
जिनने शीश दिये चरणों में
आज वृहद आयोजन है।

अंबर में ध्वनि गूंज रही
जननी के जय-जय गानों की,
आज चली है सेना फिर से
धीर वीर मस्तानों की।

सत्याग्रही बनें सब मिलकर
देशप्रेम से नाता हो,
अपने प्राणों से भी प्यारा
जिसको भारतमाता हो।

प्राण जायं, छोड़ें न प्रण हम
ऐसी टेक निभाना हो,
स्वतंत्रता की रटन अधर में
जिसका भाग्य विधाता हो।

बलिवेदी पर भीड़ लगी है
आज अमर बलिदानों की,
आज चली है सेना फिर से
धीर वीर मस्तानों की!

जय जय जय

(प्रयाण गीत)

फूंको शंख, ध्वजायें फहरें
चले कोटि सेना, घन घहरें।
मचे प्रलय !
बढ़ो अभय !
जय जय जय !

जननी के योद्धा सेनानी,
अमर तुम्हारी है कुर्बानी;
हे प्रणमय !
हे व्रणमय !
बढ़ो अभय !

निज पददलित प्रजा के क्रंदन
अब न सहे जाते हैं बंधन !
करुणामय !
बढ़ो अभय !
जय जय जय !

बलि पर बलि ले चलो निरंतर,
हो भारत में आज युगांतर;
हे बलमय!
हे बलिमय!
बढ़ो अभय!

तोपें फटें, फटे भू अंबर
धरणी धंसे, धंसे धरणीधर,
मृत्युंजय !
बढ़ो अभय!
जय जय जय!

अमर भाग्य के आगे थर थर,
कंपे विश्व, कांपे विश्वंभर,
हे दुर्जय!
बढ़ो अभय!
जय जय जय!

बढ़ो प्रभंजन आंधी बनकर;
चढ़ो दुर्ग पर गांधी बनकर.
वीर दुर्जय!
धीर दुर्जय!
जय जय जय!

राजतंत्र के इस मंदिर पर,
प्रजातंत्र के उड़ें सर्वाधिकार.
जनगण जय!
जनमत जय!
बढ़ो अभय!

जगें मातृ-मंदिर के ऊपर,
स्वतन्त्रता के दीपक सुन्दर,
मंगलमय !
बढ़ो अभय !
जय जय जय !

कोटि कोटि नित नत कर माथा,
जन-गण गावें गौरव-गाथा;
तुम अक्षय !
अमर अजय !
जय जय जय !

बढ़े चलो ! बढ़े चलो !

(प्रयाण गीत)

न हाथ एक शस्त्र हो,
न साथ एक अस्त्र हो,
न अन्न, नीर वस्त्र हो,
हटो नहीं,
डटो वहीं,
बढ़े चलो,
बढ़े चलो !

रहे समक्ष हिमशिखर
तुम्हारा प्रण उठे निखर,
भले ही जाये तन बिखर,
रुको नहीं,
झुको नहीं,
बढ़े चलो,
बढ़े चलो !

घटा घिरी अटूट हो
अधर में कालकूट हो,
वही अमृत का घूँट हो,

जिये चलो
मरे चलो
बढ़े चलो
बढ़े चलो!

गगन उगलता आग हो
छिड़ा मरण का राग हो,
लहू का अपने फाग हो
अड़ो वहीं
गड़ो वहीं
बढ़े चलो
बढ़े चलो!

चलो नई मिसाल हो,
जलो नई मशाल हो,
बढ़ो नया कमाल हो,
रुको नहीं
झुको नहीं
बढ़े चलो
बढ़े चलो!

अशेष रक्त तोल दो;
स्वतन्त्रता का मोल दो,
कड़ी युगों की खोल दो,
डरो नहीं
मरो वहीं
बढ़े चलो!
बढ़े चलो!

जय राष्ट्रीय निशान !

जय राष्ट्रीय निशान !
जय राष्ट्रीय निशान !
जय राष्ट्रीय निशान ! !

लहर लहर तू मलय पवन में,
फहर फहर तू नील गगन में,
छहर छहर जग के आंगन में,

सबसे उच्च महान !
सबसे उच्च महान !
जय राष्ट्रीय निशान ! !

जब तक एक रक्त कण तन में,
डिगें न तिल भर अपने प्रण में,
मचावें रण में,

जननी की संतान
जननी की संतान
जय राष्ट्रीय निशान ! !

मस्तक पर शोभित हो रोली,
बढ़े शूरवीरों की टोली,
खेलें आज मरण की होली,

बूढ़े और जवान!
बूढ़े और जवान!
जय राष्ट्रीय निशान!!

मन में दीन-दुखी की ममता,
हममें हो मरने की क्षमता,
मानव मानव में हो समता,

धनी गरीब समान
गूंजे नभ में तान
जय राष्ट्रीय निशान!!

तेग मेरुदंड हो कर में,
स्वतन्त्रता के महासमर में,
वज्र शक्ति बन व्यापे उर में,

दे दें जीवन-प्राण!
दे दें जीवन-प्राण!
जय राष्ट्रीय निशान!!

अर्ध-नग्न

(एक बार गांधीजी एक गांव में गये। वहां उन्होंने एक स्त्री को मैले-कुचैले कपड़े पहने देखा। गांधीजी वहां रुक गये, और उन्होंने उस स्त्री से इतने गन्दे रहने का कारण पूछा। स्त्री ने कहा कि उसके पास एक ही धोती है, और गांव में कहीं पानी नहीं है इसलिए कपड़े साफ करने का अवसर नहीं मिलता। उसने यह भी कहा कि आप बड़े आदमी हैं, हम गरीबों का दुःख नहीं जान सकते। हमारे जैसे करोड़ों बहनें भाई इसी प्रकार रहते हैं। गांधीजी को स्त्री की बात घर कर गई और गांधीजी सहम गये। और उन्होंने व्रत लिया कि जब तक देश के सभी भाई-बहन पूरे कपड़े नहीं पहनेंगे, तब तक वे भी शरीर में आधे कपड़े पहनेंगे, एक लँगोटी भर लगायेंगे। गांधीजी ने स्त्री को समझाया कि यदि वह चरखा कातना प्रारम्भ करे, तो देश की सभी गरीबी दूर होगी। पता नहीं उस स्त्री ने चरखा चलाया या नहीं, किन्तु उस दिन से गांधीजी ने लँगोटी पहनकर ही जीवन बिताया।)

चर्चा और अर्चा है जिसकी आज घर घर
गाता है गीत मुग्ध-मानव का स्वर स्वर,
उसके ही चरित्र का पवित्र यह आख्यान
लघु सा उपाख्यान—
साबरमती का संत
जिसका गौरव अनंत
पहुँच गया एक बार, एक ग्राम,
जल का था जहाँ न नाम

देखा खड़ी वहीं एक
अन्त्यज अछूत नारी
जैसे आपदा की मारी
दुर्गंधित
परिधान
जैसे हो मलिनता स्वयं बनी मूर्तिमान।
आगे सन्त बढ़ न सका
आगे चरण पड़ न सका,
रुक गया वहीं अधीर
गूँजी वाणी गंभीर—
"भद्रे ! क्यों मलिन तुम
दुर्गंधित वेश धरे
युग युग के क्लेश धरे ?
स्वच्छता सभी बिसार
रहती क्यों इस प्रकार ?
नारी कुछ ठिठकी,
निज लघुता का हुआ भान,
अपनी मलिनता दरिद्रता का हुआ ज्ञान
लज्जा से नीचे गड़ी चुपचाप
सोचती रही कुछ क्षण खड़ी आप,
खुलते ही कंठ-स्वर
फूटे नयन निर्झर
बोली—
"महाराज। बड़े लोग आप,
दीन हीन जनों का है जीना भी अभिशाप।
धोती यही एकमात्र
जिससे ढंके रहती गात्र,
पहनती इसे ही दस वर्षों से लगातार,

और कुछ नहीं, इसके भी हुए तार तार,
मिल गया जल कहीं यदि सौभाग्य से
धोती पहले एक छोर
उससे लपेट तन,
धोती हूँ फिर और छोर।
मैं ही नहीं—मेरी ही तरह और
कोटि-कोटि बहनें हैं, भाई हैं ठौर-ठौर।
खाते कौर गिन-गिन
काट रहे मुझसे ही अपने जिन्दगी के दिन।"
सिहर गई आत्मा, अस्थिर महात्मा।

अपने उत्तरीय को निकाल
नारी पर दिया डाल,
प्राणों की गहन पीर, बोल उठी हो अधीर—
"कातो सूत मेरी बहन,
व्रत यह करो ग्रहण
होगा सभी कष्ट दूर,
होगी सुख से भी भरपूर।"
बापू ने किया संकल्प, चले जो कि कल्प-कल्प।
"जब तक कोटि भाई, बहन
रहते हैं ये अ-वसन,
उनसा रहूँगा मैं भी, सुख-दुख सहूँगा मैं भी;"
सेवाग्राम का यह यती, तन से अर्ध-नग्न व्रती,
जिसकी नित्य जनता उतारती है आरती
गाते गीत नहीं कभी थकती है भारती।

उपवास

किया जब जब तुमने उपवास
बल से नहीं, किन्तु निज बलि से
बदल दिया इतिहास !

हम अकुलाये धाये, जन जन
जीवन बना अधीर,
पर, दिन दिन तव तेज रश्मि
चमकी बन गहन गंभीर!
सूची भेदी अंधकार क्रम क्रम
से हुआ विनाश !
खिला तृण-तृण में पुण्य प्रकाश!
किया जब जब तुमने उपवास !

पशुपति ! वह अमोघ शर तुमने
किया जहाँ संधान !
अंग-अंग लगा काँपने थर-थर
काँपे भू के प्राण !
गरल घूँट पी स्वयं अमृत से
भरा धरा आकाश !
मृत्यु का कर पद पद उपहास !
किया जब जब तुमने उपवास !

हिंसा के अकांड तांडव पर,
टूटा उल्कापात,
घिरे मेघ हट गये गगन में
देख वज्र संघात!
छिटकी शुभ्र चांदनी जीवन
में ले प्रेम विकास,
शान्ति को मिला मधुर आवास!
किया जब जब तुमने उपवास!

मिटे कलह कोलाहल क्रन्दन
दुख अवसाद विषाद,
वितरे चिर सुख शान्ति विश्व को
नव तप पुण्य प्रसाद;
आत्म-प्रज्ञ, तुम धन्य! धन्य तव
आत्माहुति अभ्यास!
हरे जगती का संकट त्रास।
तुम्हारा यह पावन उपवास!

व्रत-समाप्ति

आज दिवस है व्रत समाप्ति का महाशान्ति का पर्व,
आज सुखद संवाद देश को, आज हमें है गर्व,

आज मेघ छंट गए, खिल उठी,
नभ में निर्मल राका,
आए चला तुम्हारे यश का
फिर मंगलमय साका!

आज हुआ संसार मुक्त, अभिशाप पाप सब खर्व,
आज दिवस है व्रत समाप्ति का, महाशान्ति का पर्व!
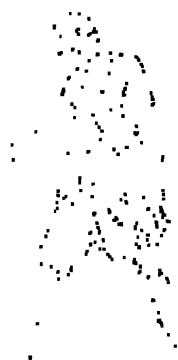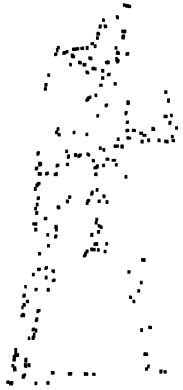
आज राष्ट्र की शिथिल धमनियों,
में जीवन की धारा,
नव जीवन, नव चेतन मन में,
आज छिन्न है कारा,

बापू ! बने रहो तुम, बन जायेंगी विधियाँ सर्व !
आज दिवस है व्रत समाप्ति का, महाशान्ति का पर्व !

नोआखाली में गांधी

यहाँ घाव हैं, वहाँ घाव हैं, कहाँ न पीड़ा प्राणों में ?
भीष्म बना बंगाल पड़ा है, आज विष बुझे बाणों में ?

अब तक शीश रहा है भीगा, शोणित से मां का अंचल
तू निर्भीक बढ़ा जाता है, अपने प्रण में अडिग अचल !

विधवाओं के पोंछे हुए, सिन्दूर न अब देखे जाते,
इतने आंसू बहे, न अब तेरे दृग में आँसू आते !

किसमें इतनी शक्ति आज, जो तेरी गति को रोक सके ?
किसमें इतनी शक्ति आज, जो तेरी मति को रोक सके ?

किसमें इतना त्याग, आज जो यों प्राणों पर खेल सके ?
किसमें इतनी आग, आग को जो यों बढ़ कर झेल सके ?

रक्त दान दे कर तू अपना चला बुझाने रक्त तृषा,
हे तापस, बस, कर न और तप, तेरा तप होगा न मृषा !
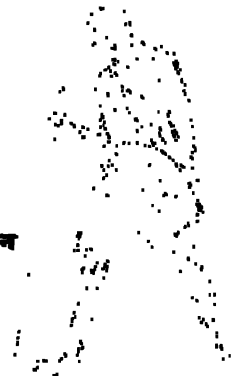
तू न जला अपना तिलतिल, तन, धधक रहे अंगारों में
मिट जायेंगे कोटि कोटि हम, तेरे तनिक इशारों में

तेरा अमृत प्रभाव, घाव भर गए, जहाँ भी तू छाया
तेरा अमृत प्रभाव, भाव भर गए, जहाँ भी तू आया,

तेरा अमृत प्रभाव, आग बुझ गई, जहाँ भी तू छाया,
तेरा अमृत प्रभाव, द्वेष नत, पद वंदन को ललचाया !

जय हो तेरी देश भक्ति की, तेरे सत्य अहिंसा की,
जय हो तेरी, और पराजय हो, भय की, प्रतिहिंसा की !

जय हो तेरी और विजय हो, अभयदान की यात्रा की,
जय हो तेरी हे पदयात्री ! इस संजीवन यात्रा की !

सदा मृत्यु की वेदी पर ही, जीवन कमल खिला करता,
शीश काट कर जो दे देता, उसको शीश मिला करता !

स्वतंत्र भारत

जय स्वतंत्र भारत, जय जननी, जय नव भारत हे !

जय नवीन आकाश धरा नव,
चंचल अंचल, हर्ष भरा भव,
जय विमुक्त विहगों के कलरव,

नव जीवनमय, नव चेतन मय, जय नव जाग्रत हे !
जय स्वतंत्र भारत, जय जननी, जय नव भारत हे !

जय नवीन ऊषा नव संध्या,
नव स्वप्नों की रजनी गंधा,
जय हिमाद्रि नव, जय नव विंध्या,

जय नवीन रथ, जय नवीन पथ, जय नव गति रत हे !
जय स्वतन्त्र भारत, जय जननी, जय नव भारत हे !

जय नव स्वर की नवल गर्जना,
जय नव कर की नवल सर्जना,
जय नव शिर की नवल अर्चना,

जय नव जन मन, जय नव पल क्षण, तन मन उन्नत हे !
जय स्वतंत्र भारत, जय जननी, जय नव भारत हे !

गांधी-तीर्थ या भंगी बस्ती

कल तक था जो निर्जीव पड़ा
वन दिल्ली का प्रान्तर अछूत।
है आज वहीं जीवन-प्रवाह
चेतन प्रवाह वह बना पूत।

है नगर तिरंगा लहराता
चर्खे का उठने लगा राग।
उठ रही राम धुन की हिलोर
फिर लगी सुलगने मलिन-आग।

नर आते आते हैं नरेन्द्र
जनगण की भीड़ चली अपार।
उस ओर जहां गांधी जी हैं
पावन दर्शन का खुला द्वार।

कितना तप तेरा पुण्य पदार्पण में
भरा हुआ बापू मेरे!
तुम जहां बसे बस गया वहीं पर
तीर्थ खड़ी जनता घेरे।

वज्रपात

आज देश पर अनभ्र वज्रपात है हुआ
आज देश का अमूल्य प्राण मृत्यु ने छुआ,
बन अमन जिला रही कि जिस फकीर की दुआ,
        आज वही महाप्राण देश में रहा नहीं?

घिर गया महान अन्धकार आज देश में,
घाव है असीम हुआ इस तरह स्वदेश में,
है बस गया निराश काल छद्म वेश में,
        लड़खड़ा रही जबान, जा रहा कहा नहीं?

कोटि-कोटि हैं, मगर वही न एक आज है,
कोटि-कोटि हैं, मगर वही न रहा राज है,
कोटि-कोटि हैं, मगर रहा न शीश ताज है,
        एक पर करोड़ हों निसार, वह चला गया?

लाल खून से रंगा निकल रहा विहान है,
आसमान रो रहा, तड़प रहा जहान है,
यह समग्र देश बन गया महा मसान है,
        आह! आज राष्ट्र पिता राष्ट्र से छला गया?

महाप्रयाण

चले त्याग तन राम अयोध्या
　　में है हाहाकार मचा।
शोक सिन्धु में डूब रही है नगर
　　सके अब कौन बचा?
　　　　वृन्दावन, गोकुल अनाथ है
　　　　　　है अनाथ भारत भाग,
　　　　मोहन छोड़ चला ब्रजमंडल,
　　　　　　रोके कौन अश्रु-धार?
लाक्षागृह में आग लगी
　　तब नहीं, आज हम भस्म हुए।
भस्म हो गये आज युधिष्ठिर
　　मृतक पिण्ड को कौन छुए?
　　　　चढ़ा आज ईसा सूली पर
　　　　　　तन से रक्त प्रवाह बहा।
　　　　फिर भी क्षमा दया का संबल
　　　　　　भूमंडल को घेर रहा।

वह मुकरान पी गया विष का
प्याला आँखें बन्द हुईं।
लो मिट्टी का पिण्ड उठा,
उज्ज्वल आत्मा स्वच्छंद हुई।
फांसी पर चढ़ गया आज
मंगल विश्व पर मुसकाता,
व्योम महम है रहा धरा का
रस समस्त सूखा जाता।
बोधिसत्त्व ने कुशीनगर में,
आज महानिर्वाण लिया।
विधवा-वसुन्धरा रोती
बापू ने महाप्रयाण किया।
गर्जो आज किसकी अर्थी है
वही क्रूर कैसी आँधी?
भारत का सौभाग्य सूर्य हो गया
अस्त, जाते
ठहरो, चिता लगाओ मत,
ओ निर्मम देश! महात्मा की,
एकबार तो चरण-धूलि
ले लेने दो पुण्यात्मा की।
धू-धू जला शरीर, हो गई,
राख महामानव काया,
आह अभागे देश, सभी कुछ,
खोकर तूने क्या पाया?
रो न, श्रद्धा हो मत इतना,
वह गरमी मत आकाश फटे।
श्रद्धांजलि दे, अश्रु रोक के
तब कुछ हाहाकार घटे।

है असीम बन गई आज
उस तेरे बापू की काया,
अमर प्रकाश पुंज बनकर
वह अंबर अवनी में छाया।
देख उसी की मूर्ति रमी है
आज प्राण के कण-कण में,
देख उसी की ज्योति खिली है,
कोटि-कोटि जनगण मन में।
खुला स्वर्ग का वातायन,
बापू है तुझे निहार रहा।
हो अधीर मत राष्ट्र, तुझे वह
अब भी खड़ा पुकार रहा।
बलि हो जाओ स्वयं नहीं
अब मानव का बलिदान करो।
करो सत्य का वरण अहिंसा
के पथ पर प्रस्थान करो।
तुम भी मृत्युंजय हो मानव,
तुम महात्मा की आत्मा।
स्नेह-सुधा बरसाओ जग में,
हमें धरा में परमात्मा।

संकल्प

जिसके बल पर उठे बढ़े हम
हमने रण हुंकार किया,
जिसके बल पर जिये मरे हम
सौ सौ संकट पार किया,
जिसके बल पर विजय मुकुट से
जननी का शृंगार किया
जिसके बल पर हो स्वतंत्र,
भारत का जयजयकार किया,
वही शान्ति की मूर्ति प्राण की
स्फूर्ति राष्ट्र पतवार गया।
गया सत्य का तेज, अहिंसा का
उज्ज्वल अवतार गया।
आज कौन है ऐसा देश जो
अब फिर तेरा त्राण करे?
जन जीवन के लिये स्वयं यों
बलिवेदी पर प्राण धरे,
[illegible] हो धरा, धैर्य तू
किसके बल पर है पाती?
[illegible]! [illegible] आज
[illegible] महात्मा की?
[illegible]! [illegible] गोली,
[illegible] न आज महात्मा को।
आज [illegible] हम
[illegible] परमात्मा को।

चला निगलने महात्मा को
महा मृत्यु की छाया में।
अविनश्वर है छिपा किन्तु
इस नर की नश्वर काया में।
मर कर भी है अमर महात्मा
जननी के जन जन मन में
अक्षय सिंहासन है उसका
प्राण प्राण में कण कण में.

यदि हममें कुछ भी कुलीनता
यदि हममें कुछ भी पानी।
इस दुख से विचलित न बनेंगे
हो कितनी ही कुर्बानी।
खड़े रहेंगे आज अडिग हो
जिस पथ पर हम डटे हुए।
खड़े रहेंगे आज अचल हो
जिस प्रण पर हम डटे हुए।

आह! आत्म-हंता ले आ
उठ रही आज है वह आंधी।
एक नहीं, चालिस करोड़
सामने खड़े तेरे गांधी।
जो गांधी ने कहा, उसी को
तिल-तिल पूर्ति करेंगे हम।
आज राष्ट्र के कण कण को,
गांधी की मूर्ति करेंगे हम।

उद्बोधन

हिम्मत हार न मेरे देश!
सच है तेरे उठे महात्मा,
सच है आज न वह पुण्यात्मा,
प्राण प्राण में किन्तु, उसी की प्रतिमा सजी अशेष!
हिम्मत हार न मेरे देश!

सच है यह, वह शक्ति उठ गई
किन्तु न अपनी भक्ति उठ गई
जन्मभूमि की भक्ति शक्ति देगी फिर हमें विशेष!
हिम्मत हार न मेरे देश!

सच है यह घन अंधकार है,
नहीं सूझता आर पार है,
पर सम्मुख पावन-प्रकाश है बापू का उपदेश!
हिम्मत हार न मेरे देश!

अब आँसू से भिगो न अंचल,
मत आँखों से भिगो धरातल,
खो न चेतना दुख असीम में, यही वीर का वेश!
हिम्मत हार न मेरे देश!

अनुशोचन उनका जो कायर,
अनुशोचन उनका जो पामर,
व्यथित न कर बापू की आत्मा, कर वन्दन स्थान शेष!
हिम्मत हार न मेरे देश!

आज गर्व कर महा तेज पर
जो सोया है अमृत सेज पर।
मृत्युंजय वह अजर-अमर, सुन गीता का संदेश!
हिम्मत हार न मेरे देश!

हम सब ऐसी करें साधना
जन-जन में हो प्रेम भावना
जननी जन्मभूमि की जय हो, जीवन का उद्देश!
हिम्मत हार न मेरे देश!

वह बापू की आत्मा बोली

देवदास गांधी न बोलते
वह बापू की आत्मा बोली,
प्राण प्राण में कण कण में फिर
वह मंगलमय छाया डोली;

सभी नहीं हिन्दू हत्यारे
हत्यारी न राष्ट्र तरुणाई,
मत कलंक का पंक उलीचो,
उन पर स्वयं जो कि मृत भाई;

आज व्यर्थ है क्रोध, व्यर्थ
प्रतिशोध आज कुछ पा न सकोगे,
आग लगा कर भी जल-थल में
बापू को लौटा न सकोगे!

बापू का बलिदान मांगता है
प्रण आज तुम्हारा निश्छल,
रंगो न हिंसा के आँगन में
भारत माता का अश्रांचल!

हे बापू की आत्मा बोलो
मेरे तरुण महात्मा बोलो,
इस विषाक्त जन जन के मन में
तुम अमृत के रसकण घोलो,

इस विनाश की महा घड़ी में
केवल तुम्हीं ज्योति की रेखा
महा मृत्यु के अंधकार में,
जिसने परम सत्य को देखा,

उठो आज जनता से ऊपर
उठो आज गना से ऊपर
गूँजे अभय तुम्हारी वाणी
उतरे सत्य स्वर्ग से भू पर!

राष्ट्रदेवता

किस भाषा में करूँ आज मैं
देव! तुम्हारा वंदन?
शब्द नहीं कर पाते हैं,
समुचित सम्मान तुम्हारा,
भाव मूक हो जाते हैं
गाते गुणगान तुम्हारा,
छंद मंद पड़ जाते हैं
रुक जाती है स्वर-धारा,
उठ-उठकर गिर-गिर जाता,
मेरी वीणा का गायन!
किस भाषा में करूँ आज मैं
देव! तुम्हारा वंदन?

युग-युग घेरे रहा गगन बन
हमको सघन अँधेरा,
था संदेह न कभी उदित
होगा फिर सुखद-सवेरा,
तुमने अपना पुण्यपाणि
ऐसा पापों पर फेरा,

पल-पल महाकाल से आगे
  बढ़ बढ़ सतत लड़ा हो।
    सागर की तो थाह नाप
      सकती सागर की धड़कन!
    किस भाषा में करूँ आज मैं
      देव! तुम्हारा वंदन?

एक बार क्या कई बार
  तुमने पी-पी विष प्याला,
जलती हुई जाति का संकट
  अपनी बलि से टाला,
हुये स्वयं बलिदान
  विश्व-प्राणों में अमृत डाला।
    विश्व चकित रह गया देख यह
      पल-पल प्राण समर्पण!
    किस भाषा में करूँ आज मैं
      देव! तुम्हारा वंदन?

धन्य धरा यह आज कि जिसमें
  तुमने जन्म लिया है,
धन्य जाति यह आज कि
  जिसको तुमने मुक्त किया है,
धन्य राष्ट्र यह आज कि जिसको
  तुमने शीश लिया है।
    तुम्हें देख कर किया विश्व
      ने बोधिसत्व का दर्शन!
    किस भाषा में करूँ आज मैं,
      देव! तुम्हारा वंदन?

नीराजना

देवता नव राष्ट्र के नवराष्ट्र की नव अर्चना लो!
विश्व वन्द्य वरेण्य बापू! विश्व की नव वंदना लो!

पा तुम्हारा स्नेह धागा,
यह अभागा देश जागा
जागरण के देवता! नव जागरण की गर्जना लो!

यह तुम्हारी ही तपस्या
युगों की गुत्थी समस्या,
कोटि-शीशों की अपरिमित नव-समर्पण साधना लो!

हे अहिंसा के पुजारी!
प्रार्थना हो कैसे तुम्हारी?
मौन प्राणों की निरन्तर स्नेहमय नीराजना लो!

लहरता नभ में तिरंगा,
लहरती है सलिल गंगा,
हे अभागिन! भक्ति भागीरथी की आराधना लो!

बापू के प्रति

तुम नवजीवन के नव विधान !
युग युग बंधन के मुक्ति-गान !
तुम आशा के स्वर्णिम प्रकाश,
मानव-मन के मधुमय विकाश।
तुम नवयुग के नूतन विहान !
तुम नवचेतन के नव विधान।
तुम हो अतीत के अमर-गीत,
भावी की मधु-छाया पुनीत,
तुम वर्तमान के कर्मगान !
तुम नव-जीवन के नव विधान !
दुर्बल दलितों के क्रांति-गान,
तुम पद-दलितों के शक्तिकोश।
मृत-जीवन के तुम जन्मप्राण !
तुम नव संस्कृति के नव विधान !
तुम करुणा के पावन प्रवाह,
तुम अमर सत्य के गंगवाह,
समता ममता के नव वितान
तुम नव संस्कृति के नव विधान !
आत्माहुति के अनुपम प्रयोग,
नूतन दधीचि के नवल योग,
बलिदान-गीत, बलिदान-गान !
तुम नव संस्कृति के नव विधान !

हम चले मिटाने जब तुमको
बेचारी दाढ़ी कट जाती,
तुम चले मिटाने जब हमको
बेचारी चोटी छट जाती।

दाढ़ी चोटी से ऊपर हम
रे अपने को पहचान जान!

हम शत्रु समझते हैं तुमको
इतिहास शत्रु बतलाता है,
हम मित्र समझते हैं तुमको
इतिहास मित्र बतलाता है!

इतिहासों में ऊपर हैं हम
रे अपने को पहचान जान!

प्रार्थना

उनको भी सद्बुद्धि राम दो!

भूले हैं जो नाम तुम्हारा
भूले हैं जो धाम तुम्हारा

उनको भी श्रद्धा अकाम दो!

भटक रहे मिथ्या माया में
आत्म भूल उलझे काया में

उनको भी गति मति प्रकाम दो!

व्यथित ग्रथित सुख दुख से कातर
करो आज उन पर करुणाकर

उनको भी दुख में विराम हो!
उनको भी सद्बुद्धि राम दो।

गांधी मन्दिर

तुम ग्रामभक्ति के सरल रूप,
तुम आगत की श्रद्धा अनूप,
तुम तर्कवाद के परे एक
गांधी भक्तों के बने भूप !

आराध्य देवता की देकर
भौतिक मन्दिर की मंजु मूर्ति,
अर्चना आरती पूजन में
निज इच्छा की कर रहे पूर्ति !

वैसे ही जैसे राम कृष्ण की
पूजा करते हम अपार,
पापों तापों अभिशापों से
चाहते सभी हैं मुक्ति द्वार।

तुम भले गान गाओ, मन की
भौतिक पूजन का [illegible] स्वरूप,
जनगण-मन में जो समा गया
[illegible] श्रद्धा का [illegible] रूप !

उसको न सकेगी शक्ति छीन
उसको न सकेगा समय छीन,
आँगन में नये तथागत की
यों बजा उठेगी भक्ति बीन!

केवल पूजन में अर्चन में
नर पा न सकेगा मोक्ष द्वार,
वे समझाने आये युग में
पर भक्ति कह रही है पुकार।

यह ज्ञान तर्क है कठिन पंथ
है भक्ति स्वयं ही एक शक्ति,
है भक्ति मुक्ति का सरल द्वार,
सार्थक है पूजा में विरक्ति!

हम देख रहे तुम में भविष्य का
वह उज्ज्वल इतिहास आज,
गांधी मन्दिर होंगे गृह-गृह
गांधी को पूजेगा समाज!

● गांधी मन्दिर-निर्माता बिहार के मनु भगत के प्रति।